पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2021-23 प्रकाशित:16.10.2021 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केवल 100/- रूपये का सहयोग करें

कृपया अपनी प्रिय पत्रिका को नियमित को बनाये रखने के लिये केवल 100/— रू का सहयोग "युवा उदघोष, A/N0.20024363377, IFSCode.MAHB0000901, बैंक आफ महाराष्ट्र, डा.मुखर्जी नगर, दिल्ली—110009 पर आनलाईन भेंजें।

वर्ष-38 अंक-10 कार्तिक-2078 दयानन्दाब्द 198 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2021 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 16.10.2021, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल में भी 297वें वेबिनार सम्पन्न

आज के संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश पर गोष्ठी सम्पन्न

जन्म से जाति व्यवस्था वेद विरुद्ध है —आचार्य विद्याप्रसाद मिश्र

सत्यार्थ प्रकाश क्रांतिकारियों का प्रेरणा स्रोत्र रहा है—राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

रविवार 3 अक्टूबर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'आज के संदर्भ में सत्यार्थ प्रकाश' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल मे 292 वां वेबिनार था। वैदिक विद्वान आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने कहा कि जन्मना जाति व्यवस्था वेद विरुद्ध है, इस व्यवस्था ने हिन्दू जाति का बहुत नुकसान किया है।उन्होंने कहा कि कर्म के साथ ही जाति निश्चित होती है।आर्य समाज ने तथाकथित छोटी जाति में जन्म लेने वाले लोगों को गुरुकुलों में उच्च शिक्षा देकर विद्वान बनाया और वह ब्राह्मण कहलाये। इसी तरह कोई व्यक्ति ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर अज्ञानी है तो वह शुद्र कहलायेगा। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में 1875 से पूर्व ही स्वदेशी राज्य की प्रशंसा लिख कह दिया था कि कोई कितना भी करे परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम है। सत्यार्थ प्रकाश सत्य का प्रकाश करता है और रुढ़ियों,पाखण्ड अंधविश्वास पर प्रहार करता है। सत्यार्थ प्रकाश एक ईश्वर की उपासना का संदेश वाहक है और गुरुडमवाद के विरूद्ध है,यदि राष्ट्र की समस्याओं का समाधान करना है तो सत्यार्थ प्रकाश को अपनाना होगा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़ कर अनेकों नोजवान आजादी के आंदोलन में कूद पड़े। प. रामप्रसाद बिस्मिल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, वीर सावरकर अनेको क्रांतिकारियों ने सत्यार्थ प्रकाश को प्रेरणा स्रोत्र बताया है। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद व्यक्ति के सोचने की दिशा ही बदल जाती है वह पाखंड और कुरीतियों में फंस नहीं सकता। मुख्य अतिथि जितेन्द्र डावर व अध्यक्ष सुरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि महर्षि दयानंद क्रांतिकारी संन्यासी थे उन्होंने आमूल चूल परिवर्तन किया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने कहा है कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। अतः हमें परोपकार के कार्यों का विस्तार और अधिक करना होगा। गायिका प्रवीना ठक्कर,रजनी चुघ,प्रतिभा कटारिया, रविन्द्र गुप्ता,रचना वर्मा, मधु खेड़ा, पुष्पा शास्त्री, सुषमा श्रीधर,राजेश मेहंदीरत्ता, नरेन्द्र आर्य सुमन, अजय कपूर, राज चावला आदि ने मधुर गीत सुनाये। प्रमुख रूप से तृप्ता डावर, आनन्द प्रकाश आर्य,प.मेघ श्याम वेदालंकार, राज गुलाटी, शशि सिंघल, सुदेश डोगरा आदि उपस्थित थे।

महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिन पर गोष्ठी सम्पन्न

आत्मरक्षा का अधिकार अहिंसा कहलायेगी —डॉ. नरेन्द्र आहूजा विवेक (चण्डीगढ़)

लालबहादुर शास्त्री भारतीय राजनीति के स्तम्भ थे—राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शुक्रवार 1 अक्टूबर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में महात्मा गांधी व लालबहादुर शास्त्री जी के जन्मदिन पर अहिंसा का अर्थ ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया। यह कॅरोना काल में 291 वा वेबिनार था। नरेन्द्र आहूजा विवेक राज्य औषधी नियंत्रक, हरियाणा ने कहा कि अपनी एवं अपने राष्ट्र की आतंकवाद और पड़ोसी के विस्तारवाद से रक्षा करना अहिंसा है, चीन हमारी जमीन में घुसने की हिम्मत करता है हम युद्ध कर उसे परास्त करते हैं यह अहिंसा है । पड़ौसी देशों के आतंकी शिविरों को उनके घर मे घुस कर खत्म करके अपने राष्ट्र की सुरक्षा करना अहिंसा है। विश्व शांति एवं सुरक्षा के लिए किए गए सभी उपाय अहिंसा कहलाते हैं । कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे दूसरा आगे कर देना अहिंसा नहीं अपितु कायरता है। अहिंसक व्यक्ति कभी कायर नहीं अपितु अत्यन्त बलशाली धैर्यवान और ईश्वर की न्यायव्यवस्था पर पूर्ण विश्वास रखने वाला होता है। विरोध को अनुरोध से, घृणा को दया से , द्वेष को प्रेम से जीतना अहिंसा कहलाता है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा लालबहादुर शास्त्री एक निर्धन परिवार से उठकर भारतीय राजनीति के क्षितिज पर पहुंचे यह उनकी तपस्या का अनुपम उदाहरण है । उनकी सादगी, विनम्रता एक अनुकरणीय उदाहरण है। उन्होंने जय जवान जय किसान का नारा दिया और देश में एक उत्साह पैदा कर दिया । आज की राजनीति में लालबहादुर शास्त्री पवित्र व साफसुथरी छवि के एक आदर्श हो सकते हैं। मुख्य अतिथि जितेन्द्र खरबंदा व अध्यक्ष नरेन्द्र कस्तूरिया ने भी शास्त्री जी की कार्यशैली व नीतियों की प्रशंसा की। प्रान्तीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि देश के प्रत्येक नागरिक को उनके व्यक्तित्व का अनुसरण करना चाहिए। शास्त्री जी की पहचान उनकी ईमानदारी है। शास्त्रीजी ने देश को उन्नति के पथ पर ले जाने में अहम भूमिका निभाई।उन्होंने कहा कि शास्त्रीजी ने हिंदी भाषा को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने के प्रयास किए और महात्मा गांधी जी को महात्मा की उपाधि स्वामी श्रद्धा नंद जी ने प्रदान की। गायिका रजनी चुघ,अंजू आहूजा, रजनी गर्ग, रचना वर्मा,ईश्वर देवी, बिंदु मदान, रविन्द्र गुप्ता,प्रतिभा कटारिया आदि ने मधुर गीत सुनाये। प्रमुख रूप से आनन्द प्रकाश आर्य,कुसुम भंड़ारी, राजेश मेहंदीरत्ता, डी पी परमार,सुरेन्द्र बुद्धिराजा,डॉ रचना चावला, मर्दुल अग्रवाल,धर्मपाल आर्य,वेद भगत,आस्था आर्या आदि उपस्थित थे।

विजया–दशमी दशहरा पर्व और रावण के वध की यथार्थ तिथि

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

प्रत्येक वर्ष भारत व देशान्तरों में जहां भारतीय रहते हैं, आश्विन शुक्ल पक्ष की दशमी को दशहरा पर्व मनाते हैं। इस पर्व से यह घटना जोड़ी जाती है कि इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने अधर्म के पर्याय लंका के राजा रावण का वध किया था। क्या यह तिथि वस्तुतः रावण वध की ही तिथि है? ऐतिहासकि प्रमाण इस तिथि के विषय में क्या कहते हैं? इस पर लेख में विचार कर रहे हैं।

श्री राम चन्द्र जी के जीवन, व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रामाणिक ग्रन्थ बाल्मीकि रामायण है। बाल्मीकि रामायण को आधार बनाकर पंडित हरिमंगल मिश्र, एम0ए0 द्वारा लिखे गये ग्रन्थ 'प्राचीन भारत' ग्रन्थ के परिशिष्ट में दशरथनन्दन रामचन्द्र जी की जीवन संबंधी घटनाओं की तिथियों की जो दो जन्त्रियां दी हैं उनमें रावण वध की तिथि ''वैशाख कृष्ण चतुर्दशी'' दी है। उक्त ग्रन्थ में ही उद्धृत पं. महादेव प्रसाद त्रिपाठी कृत ''भक्ति विलास'' के आधार पर दूसरी तिथि 'फाल्गुन शुदि एकादशी' गुरुवार ज्ञात होती है। एक अन्य विद्वान पंडित हरिशंकर जी दीक्षित अपनी 'त्यौहार पद्धति' में लिखते हैं ''रामायण का कथन (आश्विन शुक्ला दशमी को रावण वध) इस विश्वास का विरोध करता है। बाल्मीकि रामायण में यह स्पष्ट लिखा है कि आज के दिन महाराजा रामचन्द्र ने पम्पापुर से लंका की ओर प्रस्थान किया था और चौत्र की अमावस्या को रावण का वध कहा गया है। इससे (पंडित हरिशंकर दीक्षित के अनुसार) यह स्पष्ट विदित होता है कि महाराजा रामचन्द्र जी की विजय तिथि चौत्र कृष्णा अमावस्या है।

उर्युक्त प्रमाणों के अनुसार आश्विन शुक्ला दशमी को महाराज रामचन्द्र जी का विजय दिवस अर्थात् विजया–दशमी पर्व मनाना बाल्मीकि रामायण से सिद्ध नहीं होता और न ही गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' ग्रन्थ से ही इस दिन रावण वध वा 'महाराज राम का विजय दिवस' सिद्ध होता है।

रामायण में यह भी वर्णित है कि रामचन्द्र जी ने वर्षा ऋतु के चार मासों में पम्पासुर में निवास किया था। सुग्रीव ने रामचन्द्र जी को आश्वासन दिया था कि वर्षा ऋतु के समाप्त होने पर उनके द्वारा सभी दिशाओं में दूतों को भेज कर महाराणी सीता जी की खोज की जायेगी। वर्षा ऋतु के बाद, कुछ विलम्ब से, सीता जी की खोज आरम्भ हुई थी। सुग्रीव के मंत्री हनुमान जी खोज करते हुए लंका जा पहुंचे थे। वहां से आकर रामचन्द्र जी को उन्होंने सीता जी की लंका में उपस्थिति का शुभ सन्देश दिया था। इसके बाद युद्ध की तैयारियां की गईं। समुद्र पार सेना के जाने व आने के लिए समुद्र पर पुल बनाया गया था। पुल बनने के बाद सेना लंका पहुंचती है और राम चन्द्र जी व लंकेश रावण की सेनाओं में घोर युद्ध होता है जो कई दिनों तक चलता है। इस युद्ध का परिणाम रावण का वध होता है। इस विवरण से तो यही प्रतीत होता है कि आश्विन शुक्ला दशमी तक तो सीता जी की खोज भी शायद ही पूरी हो पायी थी। अतः रावण वध व राम विजय की तिथि आश्विन शुक्ला दशमी रामायण के प्रमाणों से प्रमाणित नहीं होती।

उपर्युक्त विवरण से रावण वध वा राम विजय की तीन तिथियां विदित होती हैं जो क्रमशः फाल्गुन शुक्ला एकादशी, चौत्र कृष्णा अमावस्या और बैशाख कृष्ण चतुर्दशी इन तीन में से कोई एक है। हमारा निजी मत है कि यदि वर्ष में एक बार राम विजय का पर्व आश्विन शुक्ला दशमी में ही सम्मिलित कर मनाया जाता है तो इसे मनाने में कोई हानि भी नहीं है। हमें सत्य इतिहास का ज्ञान होना चाहिये। किन्हीं कारणों से अतीत में हमारे पूर्वजों ने आश्विन शुक्ला दशमी के दिन मनाये जाने वाले पर्व में विजयादशमी के इस विजय दिवस पर्व को भी जोड़ दिया होगा। इससे यह पर्व अनेक महत्ताओं वाला पर्व बन गया है। सत्य के प्रतीक महाराजा राम ने असत्य व पाप के प्रतीक रावण को मारा था। हमें राम चन्द्र जी के गुणों को धारण करना है और रावण के अवगुणों से दूर रहना है। यही इस पर्व का अर्थ वा तात्पर्य प्रतीत होता है।

प्राचीन काल में इस पर्व से अनेक प्रयोजन जुड़े रहे हैं। यह पर्व क्षत्रियों का पर्व है। वह इस दिन अपने अपने आयुद्ध तलवार एवं युद्ध की सामग्री का परिमार्जन कर उन्हें युद्ध करने योग्य बनाते थे और देश को सुरक्षित रखने व शत्रु से रक्षा व उस पर विजय की योजना बनाते थे। सम्भवतः इसी कारण रावण वध की आदर्श घटना इस पर्व की प्रतीक मानी गयी है। इस अवसर पर कृषक व वैश्य अपने भावी कार्यों का मूल्यांकन व कार्यों का आरम्भ करते थे, ऐसे संकेत मिलते है जिनका होना सम्भव है। इन सब का मिला–जुला यह पर्व है जिसे इसके महत्व का विचार कर मनाना चाहिये। 4 वर्ष पूर्व भारत ने म्यमार के भारत विरोधी आतंकी ठिकानों पर सफल सर्जिकल स्टाइक की थी। एक वर्ष पूर्व भी भारत ने पाकिस्तान में प्रवेश कर उनके आतंकी ठिकानों को ध्वस्त किया था और उरी पर आतंकी हमले व उसमें 19 देशभक्त सैनिकों के बलिदान का बदला लिया था। ऐसे कुछ अन्य उदाहरणों को भी हम इस पर्व के अवसर पर स्मरण कर सकते हैं व गौरवान्वित हो सकते हैं। मोदी सरकार के नेतृत्व में यह घटनायें व कार्य देश व सेना के गौरव का अपूर्व ऐतिहासकि कार्य हुआ है। हम पूर्व की सरकारों से ऐसे कार्यों का अनुमान भी नहीं कर सकते थे। यह विजय भी इस पर्व व उल्लास को मनाने का हमारा कारण होना चाहिये। इससे पूर्व रामायण एवं महाभारत में प्रस्तुत व उपलब्ध इतिहास में हमारे देश के वीरों की वीरता के उदाहरण देखने को मिलते हैं। हमें यह भी लगता है कि दशमी के दिन मनाये जाने के कारण इसका नाम दशहरा है। विजया दशमी पर्व की सभी पाठकों को हार्दिक शुभ कामनायें।

हमने इस लेख में रावण वध वा राम विजय की तिथि विषयक जानकारी आर्यपर्व पद्धति से सधन्यवाद ली है। ओ३म् शम्।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

तपोवन आश्रम देहरादून चलो

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून का शरद उत्सव दिनांक 20 अक्टूबर से 24 अक्टूबर 2021 तक आयोजित किया जा रहा है।

आप सभी श्रद्धालु आर्य जन सादर आमंत्रित हैं।

–प्रेम प्रकाश शर्मा, मंत्री

हिमांशु शेखर प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज सफदरजंग एनक्लेव नई दिल्ली के चुनाव में श्री बलवंतराय भगत की अध्यक्षता में श्री हिमांशु शेखर–प्रधान व श्रीमती सरोज कोड़ा–महिला प्रधान सर्वसम्मति से चुनी गईं हैं।

–स्वदेश कुमार शर्मा

मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी चन्द्र वेश जी का निधन

बुधवार 29 अक्टूबर 2021, शम्भू दयाल वैदिक संन्यास आश्रम आर्य नगर गाजियाबाद के प्रधान स्वामी चन्द्रवेश जी का निधन हो गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि स्वामी चन्द्रवेश जी वेदों के प्रकांड विद्वान थे। बड़े बड़े यजो के ब्रह्मा पद को सुशोभित करते थे उनके जाने से आर्य समाज की अपार क्षति हुई है। स्वामी जी अत्यंत सरल स्वभाव के व्यक्ति रहे जिसको मिलते थे अपना बना लेते थे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने कहा कि स्वामी चंद्रवेश जी व्याकरण के सूर्य थे। वह महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त व संघर्ष शील व्यक्तित्व के धनी रहे । समस्त साधु मंडल आज शोक ग्रस्त है। उत्तर प्रदेश प्रान्तीय महामंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि स्वामी चंद्रवेश जी गाजियाबाद जिले की शान थे सभी शोभा यात्राये उनके नेतृत्व में ही संम्पन्न होती थी । उनके जाने से एक गौ सेवक की कमी अखरती रहेगी। हापुड़ आर्य समाज के आनंद प्रकाश आर्य,वृंदावन गार्डन से के के यादव,सुरेश आर्य,प्रमोद चौधरी, इंदिरापुरम से यज्ञवीर चौहान,देवेन्द्र गुप्ता, यशोवीर आर्य,महेन्द्र भाई, अरुण आर्य,उर्मिला आर्या,देवेन्द्र भगत,डॉ आर के आर्य आदि ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए उनकी सेवाओ को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

योग और निष्काम कर्म पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

निष्काम भाव से कार्यरत रहना ही योग है –योगाचार्य श्रुति सेतिया
व्यक्ति को अनवरत कर्म करते रहना चाहिए –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

मंगलवार 5 अक्टूबर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में योग और निष्काम कर्म पर गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल में 293 वां वेबिनार था। योगाचार्य श्रुति सेतिया ने कहा कि निष्काम भाव से कर्म करना ही योग है। उन्होंने कहा कि हम अपने बनाए मंदिरों को साफ सुथरा और सुगंधित रखते हैं, लेकिन कैसा आश्चर्य है कि ईश्वर की बनाई श्अष्ट चक्र नव द्वारा देवा नाम पुरयोध्याश यानी अपने शरीर रूपी मानव मंदिर को हम शाश्वत शराब, मांस, अंडे, बीड़ी, सिगरेट का धुआं सब डालते हैं। जीवन कला के अभ्यासी को आहार शुद्धि का विचार रखते हुए ध्यान रखना है कि हमारी कमाई भी शुभ और सात्विक हो। सामान्यता योग का अर्थ अग्नि या सूर्य के समक्ष महीनो, वर्षों के लिए तपना नहीं होता। योग का वास्तविक अर्थ है कि अपने वर्णाश्रम के अनुसार निष्काम भाव से कर्मरत्त रहना। वासनाओं की अग्नि में इंद्रियों को तपा कर निर्विषय कर देना और जीवन संग्राम के समस्त दुखों को प्रभु का प्रसाद समझकर उनसे संपूर्ण पुरुषार्थ के साथ विशेष रूप से जूझते रहना। प्रायः समझा जाता है श्लोकयम धर्म बंधनश अर्थात कर्म लोके बंधन का कारण है,लेकिन योग इसके विपरीत हमें सिखाता है कि कर्म ही बंधन मुक्ति का साधन है।श्री कृष्ण कहते हैं–ष हे अर्जुन संसार के सारे दुख संग के कारण हैं । योग और कुछ नहीं कर्म करते हुए सिद्धि– असिद्धि में समभाव बनाए रखना,परमात्मा के साथ ही युक्त रहना,अपने को उसी के हाथों में दे देना ही योग है।योग का अर्थ अपने को संपूर्ण रूप से मानव देव ऋषि बनाना है। आध्यात्मिक जीवन में एक शब्द अक्सर सुनने में आता है– निष्काम।जीवन में हम बिना कर्म किए रह ही नहीं सकते।कर्म के बिना तो पशु भी नहीं रह सकते। निष्काम कर्म उसे कहते हैं जिसके पीछे हमारा कोई निजी हित,निजी स्वार्थ ना जुड़ा हो। जिसका हमारे लिए कोई लाभ ना हो।हमेशा याद रखिए, दूर तक वही कर्म लाभ देते हैं।कर्म में निष्कामता का भाव होगा तो हमारी संवेदनाएं प्रबल होंगी,हम संवेदनशील बनेंगे।दूसरों की सहायता कर हम अपने भीतर निष्कामता का भाव लाने की शुरुआत कर सकते हैं।खुद के स्वार्थ को ना देखें।फायदा हो रहा है या नुकसान इसका विचार मन में ना लाएं।हमेशा ना सही लेकिन कभी–कभी हमारे मन में,कर्म में निष्कामता का भाव आएगा तो जीवन में कई उलझनों का उत्तर मिल जाएगा,हल मिल जाएगा । श्री कृष्ण भगवत गीता में निष्काम कर्म योग का उपदेश देते हुए कहते हैं ष जो दुख –सुख ,सर्दी –गर्मी, लाभ –हानि , जीत– हार, यश –अपयश, जीवन– मरण , भूत –भविष्य की चिंता ना कर के मात्र अपने कर्तव्य कर्म में लीन रहता है वही सच्चा निष्काम कर्म योगी है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि व्यक्ति को बिना फल की कामना के सदैव कार्य करते रहना है सफलता निश्चित मिलेगी । मुख्य अतिथि शशि सिंघल (प्रधाना, महिला आर्य समाज हापुड़) व अध्यक्ष वीना वोहरा (योग शिक्षक,अखिल भारतीय ध्यान योग संस्थान गाजियाबाद) ने भी मानव जीवन को सेवा कार्य के लिए अर्पित करने का आह्वान किया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि योग सर्वांग सुन्दर बनाने की कला है, महर्षि पतंजलि के अष्टांग योग यम,नियम,आसन, प्रत्याहार, धारणा,ध्यान,समाधि द्वारा हम परमपिता परमात्मा को हृदयांतराल में साक्षात कर आनन्दानुभूति कर सकते हैं। गायिका रजनी चुघ,बिंदु मदान, उर्मिला आर्या(गुरुग्राम),ईश्वर देवी,दीप्ति सपरा, राजकुमार भण्डारी, सुदेश आर्या,प्रवीना ठक्कर, प्रवीण आर्या,आदर्श आर्य,सोहन लाल आर्य,सुमित्रा गुप्ता आदि ने मधुर गीत सुनाये । प्रमुख रूप से आनन्द प्रकाश आर्य,आस्था आर्या,कुसुम भंडारी, करुणा चांदना, रचना वर्मा, सुशांता अरोड़ा, मर्दुल अग्रवाल, कृष्णा गांधी,प्रतिभा कटारिया आदि उपस्थित थे।

नवरात्रि में नवधा भक्ति नवनिधि का महत्व विषय पर आर्य गोष्ठी सम्पन्न

नवदिवसीय भक्ति से नवोद्धार –आचार्य चंद्रशेखर शर्मा (ग्वालियर)

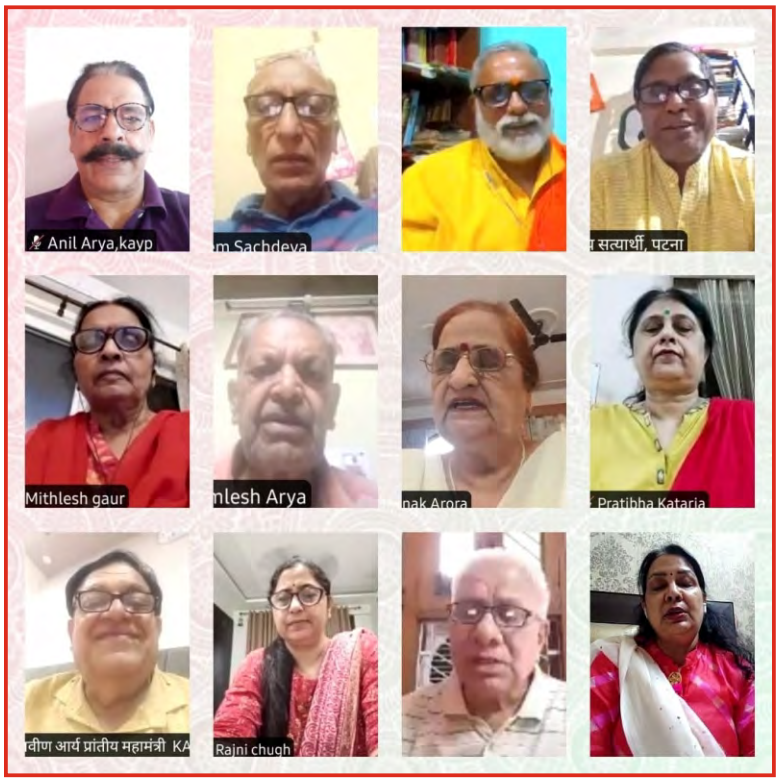

गुरुवार 7 अक्टूबर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान मे नवरात्रि में नवधा भक्ति नवनिधि का महत्व विषय पर आर्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल में 294वां वेबिनार था। नवरात्रि में नवधा भक्ति और नवनिधि का महत्त्व इस संप्रेरक विषय पर अपनी ओजस्वी वाणी में बोलते हुए आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा ने इस सेमिनार में कहा–**1. 'नवरात्रि का विशेष भाव'**–मानवजीवन में शारदीय नवरात्रि का विशेष महत्त्व है। यह नवरात्रि– नव भावों,नव विचारों, नव संस्कारों, नव भक्ति, नव शक्ति, नव साधना, नव द्वार, नव चक्र, नव निधि, नव देवीनाम, नव देवी महिमा, नव क्रांति, नव चेतना का नव दिवसीय आध्यात्मिक महोत्सव है। **2. 'नवदिवसीय भक्ति से नवोद्धार'**–नवदिवसीय संकल्प साधना, मंत्रजाप,एकाग्र भक्ति,शुद्ध भाव, शुद्ध आहार आदि व्रत करने से नव उल्लास,नव उमंग,नव विश्वास,नव श्रद्धा का दैवीय संस्कार समुत्पन्न होता है।नव दिवसीय साधना से जीवन में नया प्रेम रंग,नया भक्तिभाव और नया दिव्यता का संस्कार उत्सृजित हो जाता है। **3. ' गायत्री मंत्र में नवधा भक्ति एवं नवधा शक्ति'**– आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा ने गायत्रीमंत्र की अनुपम व्याख्या करते हुए कहा कि इस मंत्र में नव प्रकार से भक्ति एवं शक्ति का भाव है। ' प्रथम–ओ३म् की भक्ति', साधक ओं की उपासना,जप, भजन आदि से दिव्यता का चिंतन करे। 'द्वितीय भूः की भक्ति' 'तृतीय भुवः की भक्ति' 'चतुर्थ–स्वः की भक्ति' 'पंचम–सवितुः की शक्ति', 'षष्ठ–वरेण्यं की वरणीयता', 'सप्तम–भर्गः का तेज', 'अष्टम–देवस्य की दिव्यता का धारण', 'नवम–धियः की प्रेरणा' इस तरह से आचार्य जी के मुखारविंद से नवीन भावों की प्रेरणा के साथ प्रवचन सुनकर श्रोतागण भाव–विभोर हो रहे थे। मुख्य अतिथि आचार्य संजय सत्यार्थी व अध्यक्ष प्रेम सचदेवा ने आयोजकों का सुंदर आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि ऐसे ज्ञान से ओतप्रोत कार्यक्रम होते रहने चाहिए। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कार्यक्रम का कुशल संचालन वा संयोजन किया। प्रांतीय महामंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि विद्या से विनम्रता आती है, विनम्रता से पात्रता–योग्यता प्राप्त होती है,योज्ञता से धन मिलता है।धन से धर्म–कार्यों का अनुष्ठान होता है और सुख की प्राप्ति होती है!यदि आप भी सुख, शान्ति और आनन्द चाहते हैं,तो विनम्र बनें। गायिका रजनी चुघ,मृदुला अग्रवाल,कमलेश चांदना,प्रेम सचदेवा,चंद्रकांता आर्या बैंगलोर, ईश्वर देवी,दीप्ति सपरा, राज कुमार भण्डारी,सुदेश आर्या, प्रवीना ठक्कर, प्रवीन आर्या आदि ने मधुर गीत सुनाये। प्रमुख रूप से मिथलेश गर्ग, आस्था आर्या,कुसुम भंडारी, करुणा चांदना, रचना वर्मा, सुशांता अरोड़ा, कृष्णा गांधी आदि उपस्थित थे।

योग से तनाव मुक्त जीवन पर गोष्ठी सम्पन्न

जीवन की परिस्थितियों से संतुलन बनाना ही योग है –योगाचार्य रजनी चुघ
योग सकारात्मक ऊर्जा पैदा करता है –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शनिवार 09 अक्टूबर 2021, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में योग से तनाव मुक्ति विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया । यह कोरोना काल में 295 वां वेबिनार था। योगाचार्य रजनी चुघ ने कहा कि विषम परिस्थितियों में भी संतुलन बनाना ही योग है।योग केवल आसन प्राणायाम तक ही सीमित नहीं है अपितु हमें अपनी जीवन शैली में भी सुधार करना होगा। ईश्वर से साक्षात्कार करवाने का मार्ग योग है और चित की वृत्तियों को रोकना भी योग है।भौतिक विकास के साथ साथ आध्यात्मिक विकास भी जीवन निर्माण के लिए आवश्यक है तभी हम तनाव मुक्त हो सकते हैं।डर, भय,चिन्ता व नकारात्मक विचार योग से समाप्त होते है।दैनिक योग व ध्यान करने से तनाव मुक्त जीवन जी सकते है और बढ़ती आयु में होने वाले रोगों से भी बचाव कर सकते हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि योग सकारात्मक ऊर्जा पैदा करता है और निराशा दूर करता है।दिनचर्या ठीक करके आत्म विश्वास में वृद्धि व कई बीमारियों से बच सकते हैं। अध्यक्ष विजय चोपड़ा ने भी योग और प्राणायाम के महत्व पर प्रकाश डाला और योग से प्रसन्नचित जीवन बनाने का आह्वान किया। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीन आर्य ने कहा कि योग ही जीवन का आधार है। नियमित योगाभ्यास वा संतुलित आहार से हमारा बीपी,शुगर भी नॉर्मल रहते हैं,मुस्कुराहट वा हंसने से हम तनावमुक्त रहते हैं। एक सामान्य व्यक्ति को अपने वजन के हिसाब से पानी पीना चाहिए जैसे बीस किग्रा के बालक को प्रतिदिन एक लीटर पानी सिप सिप करके पीना चाहिए,इसी प्रकार 100 किग्रा वाले को पांच लीटर पानी पीने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है,ना इससे कम ना ज्यादा।लेकिन आज व्यक्ति पानी कम पीता है जिसके कारण अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। गायिका संगीता आर्या गीत, प्रवीना ठक्कर,बिंदु मदान, अनुश्री खरबंदा,सुदेश आर्या,रचना वर्मा, विजय लक्ष्मी आर्या,जनक अरोड़ा,ईश्वर देवी,कुसुम भंड़ारी, निर्मल विरमानी आदि के मधुर भजन हुए। प्रमुख रूप से आंनदप्रकाश आर्य,महेन्द्र भाई, वीना आर्या, राजेश चुघ,अमीरचंद रखेजा, कमलेश चांदना,प्रतिभा कटारिया, आस्था आर्या आदि उपस्थित थे।

वैदिक दृष्टि में सृष्टि निर्माण पर गोष्ठी सम्पन्न

विश्व को वैदिक ज्ञान के लिए वैदिक फिजिक्स की ओर लौटना होगा –डॉ. अलका आर्य, निदेशक डी डी ए

बुधवार 13 अक्टूबर 2021,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में वैदिक दृष्टि में सृष्टि निर्माण विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल में 297 वां वेबिनार था। डॉ.अल्का आर्या (निदेशक योजना,दिल्ली विकास प्राधिकरण) ने कहा कि आचार्य श्री अग्निवृत् नैष्ठिक जी के ऐत्रये ब्राह्मण ग्रंथ के वैदिक भाष्य से जो कि श वेद विज्ञान आलोकश नामक ग्रंथ से रचित है से प्रेरणा पा कर श वैदिक रश्मि थ्योरीश को प्रस्तुत कर रही हूं। वैदिक रश्मि थ्योरी के अनुसार ईश्वर अपनी कृपा से प्रकृति तत्व में श्ओ३म्श वायब्रेशन उत्पन करते हैं।ओ३म् ऊर्जा का प्रथम स्रोत्र होता है।इसके उपरांत कई तरह की छंद रश्मियां प्रकृति तत्व को स्पंदित करके उसे मनस तत्व में परिवर्तित करती हैं।मनस तत्व से आकाश तत्व,आकाश तत्व के संपीढाण् से वायु तत्व,वायु तत्व से अग्नि तत्व,अग्नि तत्व के संपीढाण् से जल तत्व तथा फिर पृथ्वी तत्व का निर्माण होता है। सृष्टि पूर्ण बन जाने के बाद 4 अरब, 32 करोड़ वर्ष तक अथवा 14 मनवंतरों तक चलती है फिर इसका संहार हो जाता है एवं सारे तत्व अपनी प्राकृतिक अवस्था में आ जाते हैं। यह प्रक्रिया अनंत काल से चलती आ रही है एवं आगे भी चलती रहेगी।पाश्चत्य विज्ञान मोलेक्युल– एटम– इलेक्ट्रॉन/प्रोटोन– क्वार्क– स्ट्रिंग के बाद आकर भौतिक विज्ञान में ठहर गया है। वे भी अब यह मान रहे हैं कि श गॉड्स पर्टिकलश नाम का तत्व होता है जिसे उपस्थित टेक्नोलॉजी के माध्यम से देखा नहीं जा सकता।अलका आर्या का यह मानना है विश्व को पूर्ण ज्ञान के लिए वैदिक फिजिक्स की ओर लौटना ही होगा।ब्रह्मांड के रहस्यों के सारे उत्तर वेद में उपस्थित हैं। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने गोष्ठी का कुशल संचालन करते हुए कहा कि वेद सृष्टि का प्राचीनतम ज्ञान है। मुख्य अतिथि विमल बुद्धिराजा व अध्यक्ष ओम सपरा ने कहा कि सृष्टि निर्माण व प्रलय एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। राष्ट्रीय मंत्री प्रवीण आर्य ने कहा कि संसार में तीन सत्ताएं सदा से थी,सदा से हैं और सदा रहेंगी, ईश्वर,जीव और प्रकृति।प्रकृति सत्य है,जीवात्मा सत्य के साथ चेतन भी है,ईश्वर सत्य,चेतन और आनंद स्वरूप है। गायिका प्रवीना ठक्कर, प्रवीन आर्या,अनुश्री खरबंदा, रजनी चुघ, रजनी गर्ग,गीता शर्मा,मधु खेड़ा,चंम्पा खन्ना,ईश्वर देवी, रविन्द्र गुप्ता,जनक अरोड़ा आदि ने मधुर भजन सुनाये। प्रमुख रूप से डॉ. कर्नल विपिन खेड़ा,महेन्द्र भाई,आनन्द प्रकाश आर्य,आस्था आर्या,आर पी सूरी, सुखवर्षा सरदाना,सुरेन्द्र बुद्धिराजा,निर्मल विरमानी आदि उपस्थित थे।

आर्यसमाज बडाबाजार (कलकत्ता) का अधिवेशन प्रधान दीनदयाल जी गुप्ता की अध्यक्षता में संपन्न

आर्यसमाज बडाबाजार (कलकत्ता) का साधारण अधिवेशन समाज भवन में समाज के प्रधान दीनदयाल जी गुप्ता की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मन्त्री आनन्ददेव आर्य ने अपने कार्यकाल का विवरण प्रस्तुत किया एवं कोषाध्यक्ष सज्जन बिंदल ने आय व्यय का ब्योरा प्रस्तुत किया जिसे सदस्यों ने ध्वनिमत मत से पास कर दिया। नये सत्र के लिए पदाधिकारियों का चुनाव किया गया ।काफी सदस्यों ने दीनदयाल जी से पुनः प्रधान पद स्वीकार करने का आग्रह किया परंतु उन्होंने नम्रता पूर्वक अस्वीकार करते हुए कहा मैं काफी वर्षों से इस पद पर हूँ अब किसी और योग्य व्यक्ति को यह दायित्व दिया जाय। समाज के वयोवृद्ध सदस्य खुशहालचन्द्र जी ने आनन्ददेव आार्य के नाम का प्रस्ताव रखा जिसका घनश्याम वर्मा तथा कैलाश कर्मठ ने समर्थन किया ।कोई और नाम नहीं आने के कारण पीठासीन अध्यक्ष दीनदयाल जी ने आनन्ददेव आर्य को निर्विरोध समाज का नया प्रधान घोषित किया। आनन्ददेव जी ने अपनी नई टीम की घोषणा की उन्होंने जोगेनद्र गुप्ता को आर्यसमाज बडाबाजार का नया मन्त्री तथा सज्जन बिंदल को कोषाध्यक्ष बनाने की घोषणा की ,जिसका सदस्यों ने ताली बजाकर समर्थन किया। दीनदयाल जी गुप्ता तथा रमेश आर्य समाज के नए संरक्षक चुने गये ।साप्ताहिक सत्संग में सर्वाधिक उपस्थिति के लिए खुशहालचन्द्र जी आर्य को चॉदरतन जी दम्माणी ने शाल ओढाकर सम्मानित किया। लॉकडाउन में जब समाज के मैनेजर स्तर २कर्मचारी अपनी गैर जिम्मेदारी का परिचय देते हुए अपने देश चले गये एक मात्र कर्मचारी सीताराम दास ने अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए अकेले इतने बड़े समाज का दायित्व संभाला उसे भी सम्मानित किया गया। नव निर्वाचित प्रधान आनन्ददेव आर्य ने सबों से परामर्श कर अपनी टीम के अन्य सदस्यों के नाम की घोषणा यथा शीघ्र करने की बात कही। समाज के नए मन्त्री जोगेन्द्र गुप्ता ने सबों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मा. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970